राजस्थान सरकार

पंच गौरव –जिला पुस्तिका

जिला प्रशासन, कोटा

सत्यमेव जयते

मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच–गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में **पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित** किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच–गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित करता हूं।

(भजन लाल शर्मा)

प्रस्तावना

राजस्थान राज्य के जिलों में विभिन्न प्रकार की भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं। इस कारण यहां अलग–अलग तरह की उपज पैदा होती है एवं विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। इसी प्रकार राज्य के विभिन्न जिलों में अलग–अलग प्रकार के हस्तशिल्प एवं औद्योगिक उत्पाद प्रमुखता से बनाए जाते हैं। इसके साथ ही, राज्य में महत्वपूर्ण खनिजों का खनन एवं प्रसंस्करण कार्य भी कई जिलों में किया जाता है। पर्यटन की दृष्टि से भी राज्य के प्रत्येक जिलें में धार्मिक, सांस्कृतिक एवं वन्यजीव पर्यटन आदि प्रमुख स्थल मौजूद हैं। राज्य में विभिन्न खेल गतिविधियां भी जिलों की प्रमुख पहचान रही हैं।

राज्य के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए प्रत्येक जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विशिष्टता के आधार पर उत्पादों/स्थलों का चयन कर उसके संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के माध्यम से जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दी जा सकती है।

प्रत्येक जिले में विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण के साथ ही इन गतिविधियों के माध्यम से आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी कर प्रदेश के सभी जिलों के सर्वांगीण विकास हेतु राज्य में 'पंच–गौरव' कार्यक्रम शुरू किया गया है।

कार्यक्रम अन्तर्गत राज्य के प्रत्येक जिले में उसकी विरासत एवं पारिस्थितिकी को ध्यान में रखते हुए 'पंच गौरव' के रूप में प्रत्येक जिले में एक जिला–एक उत्पाद, एक जिला–एक उपज, एक जिला–एक वनस्पति प्रजाति, एक जिला– एक खेल एवं एक जिला–एक पर्यटन स्थल चिह्नित किए गए हैं। कोटा जिला भी अपनी विविधतापूर्ण विरासत के लिए खास पहचान रखता है।

कोटा में जिला स्तर पर चयनित पंच गौरव निम्नानुसार हैं–

एक जिला–एक उत्पाद– कोटा डोरिया
एक जिला–एक उपज– धनिया
एक जिला–एक वनस्पति प्रजाति– खैर
एक जिला– एक खेल– कुश्ती
एक जिला–एक पर्यटन स्थल – चम्बल रिवर फ्रंट

कार्यक्रम के उद्देश्य

जिले की आर्थिक, पारिस्थितिकी एवं ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण और संवर्धन।स्थानीय शिल्प, उत्पाद, कला को संरक्षण प्रदान करना एवं उत्पादों की गुणवता, विपणन क्षमता में सुधार एवं निर्यात में वृद्धि करना।स्थानीय क्षमताओं का वर्धन कर जिलों में स्थानीय रोजगार को बढ़ाकर जिलों से प्रवास को रोकना। जिलों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित करना। प्रमुख वनस्पति प्रजातियों का संरक्षण एवं इनके वैज्ञानिक व व्यावसायिक प्रयोगों को बढ़ावा देना। खेलों के विकास के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार, रोजगार तथा पहचान सृजित करना। ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों का संरक्षण करना एवं इन स्थलों पर वैश्विक स्तर की आधारभूत सुविधाएं विकसित करना। सभी जिलों में समान विकास को बढ़ावा देकर क्षेत्रीय विषमताओं/असंतुलन को कम करना।

कोटा जिले के पंच गौरव

कोटा जिले के सर्वांगीण विकास एवं संभावनाओं के आधार पर आर्थिक गतिविधियों एवं रोजगार के अवसर को बढ़ाने के लिए पंच गौरव का चयन किया गया है। कोटा जिला प्राकृतिक सौंदर्य, पर्यटन, कृषि–उद्यानिकी में समृद्ध एवं परम्पराओं का धनी है। जिले के लिए चयनित पंच गौरव एक जिला–एक उत्पाद– कोटा डोरिया, एक जिला–एक उपज– धनिया, एक जिला–एक वनस्पति प्रजाति– खैर, एक जिला– एक खेल– कुश्ती, एक जिला–एक पर्यटन स्थल – चम्बल रिवर फ्रंट निश्चित ही जिले के विकास के नए आयाम खोलेंगे। इन पंच गौरवों के संरक्षण और संवर्द्धन के लिए राज्य सरकार के निर्देशन में योजनाबद्ध तरीके से कार्य योजना क्रियान्वित की जाएगी।

एक जिला एक पर्यटन स्थल

चम्बल रिवर फ्रन्ट

चम्बल रिवर फ्रन्ट भारत में विकसित प्रथम हैरिटेज रिवर फ्रन्ट है। यह परियोजना पूर्ण विकसित की जा चुकी है जो कि कोटा शहर में पर्यटकों को आकर्षित कर रही है। इससे कोटा शहर में रोजगार के नवीन अवसर उपलब्ध होंगे तथा कोटा की अर्थव्यवस्था को काफी बढ़ावा मिलेगा।

कोटा शहर में कोटा बैराज से नयापुरा पुलिया तक 2.75 किमी की लम्बाई में चम्बल नदी के दोनों तटों पर लगभग 1442 करोड़ की लागत से चम्बल रिवर फ्रन्ट विकसित किया गया है। इससे चम्बल नदी के किनारे बसी सभी बस्तियां बाढ़ से मुक्त हो चुकी है। इस परियोजना के अन्तर्गत चम्बल नदी में बैराज के डाउन स्ट्रीम में गिर रहे समस्त गन्दे नालों को ट्रेप कर नाले के पानी को बालिता स्थित 30 एमएलडी एस.टी.पी. के माध्यम से शोधन किया गया है एवं शोधित जल को पुनः रिवर में डाला गया है। इस कार्य से चम्बल का शुद्धिकरण भी हो रहा है। रिवर फ्रन्ट के दोनों तटों पर 27 घाटों का निर्माण किया जा चुका है।

इस परियोजना के मुख्य आकर्षण निम्नानुसार है :–

पूर्वी छोर

- **चम्बल माता घाट :–**वृंदावन गार्डन की तर्ज पर चम्बल माता घाट मय गार्डन विकसित किया है। इसमें खुबसूरत म्यूजिकल फाउण्टेन का निर्माण किया गया है। घाट पर 42 मीटर ऊंची वियतनाम मार्बल से चम्बल माता की मूर्ति निर्मित की गई है। इसमें मुकुट महल का निर्माण किया गया है जिसमें रिवर फ्रंट का विशालकाय मॉडल, संग्रहालय एवं विव्यु पॉईंटस का निर्माण किया गया है।
- **गणेश पोल :–**इसमें दो विशालकाय महराबों पर निर्माण किया गया है, जिस पर गणेश जी की मूर्ति स्थापित की गई है। फसाड़ को आगरा फोर्ट की तर्ज पर विकसित किया गया है, इसमें वीआईपी लॉन्ज बनाया गया है।
- **मरू घाट :–**इस घाट पर गन मेटल की छः ऊँटों की प्रतिमाओं को लगाया गया है। घाट व फसाड़ वॉल के बीच उपलब्ध जमीन पर वीआईपी टेन्ट सिटीविकसित की जा रही है।
- **जंतर–मंतर घाट :–**इस घाट पर जोडियक टावर का निर्माण किया गया है, जिसमें 12 राशि चक्रों को दर्शाया गया है। इसके अलावा इसमें सूर्य यंत्र एवं राशि यंत्र का निर्माण किया गया है। फसाड़ पर विश्व प्रसिद्ध जयपुर की ब्लू पॉटरी वर्क एवं ठीकरी वर्क किया गया है।
- **विश्व मैत्री घाट :–**इस घाट पर विशाल बैंक्वेट हॉल का निर्माण किया गया है । इसमें 10 मीटर व्यास के ग्लोब का निर्माण किया गया है जिसमें सम्पूर्ण विश्व समाहित है। इसमें जी–20 समूहके देशों के झंडों को लगाया गया है। इस घाट की थीम वन वर्ड वन ड्रीम पर आधारित है। इसके फसाड़ में 9 विश्व प्रसिद्ध इमारतों की प्रतिकृति का निर्माण किया गया है, वहां पर सम्बन्धित देशों के व्यजंनो को परोसा जायेगा
- **हाड़ौती घाट:–**फसाड़ मेंहाड़ौती की समृद्ध वास्तुशिल्प को अंकित किया गया है, जिसमें बूंदी के तारागढ़ फोर्ट के मुख्य द्वार गणेश पोल का निर्माण किया गया है एवं हाड़ी रानी एवं पन्नाधाय की गन मेटल की आदमकद मूर्तियां लगाई गई है। इसके अलावा 84 खम्बों की छतरी का निर्माण किया गया है।
- **महात्मा गांधी सेतु :–**रामपुरा शमशान पर पर्यटकों के आवागमन हेतु महात्मा गांधी सेतु का निर्माण किया गया है।
- **कनक महलः–**इसमें 6 टावर्स का निर्माण किया गया है जिस पर बने डोम पर सुनहरे रंग की टाईलों को लगाया गया है। इसमें वाटर पार्क व रेस्टोरेंट का निर्माण किया गया है।
- **फव्वारा घाट :–**इसमें खूबसुरत लगून मय सीढ़ियों के निर्माण किया गया है एवं इसमें विश्व स्तरीय लिनियर फाउन्टेन शो विकसित किया गया है। फसाड़ में व्यावसायिक दूकानें एवं फूड कोर्ट का निर्माण किया गया है।
- **रंगमंच घाट :–**इसमें एम्फी थियेटर मय ग्रीन रूम का निर्माण किया गया है, एवं घाटों को पियानो के की–बोर्ड के रूप में विकसित किया गया है।

- **साहित्य घाटः**—साहित्य घाट में बांसवाड़ा मार्बल से खूबसुरत विशाल खुली किताब एवं पुस्तक महल का निर्माण किया गया है। फसाड़ में भूतल पर लाईब्रेरी एवं प्रथम तल पर कैफेटेरिया विकसित किया गया है।
- **उत्सव घाट :**—इसमें बैंक्वेट हॉल, खूबसूरत छतरियाँ, केसकेड एवं स्टार फाउन्टेन का निर्माण किया गया है।
- **सिंह घाटः**—इसमें बांसवाड़ा मार्बल से निर्मित 9 सिंह लगाए गए हैं जिनका वजन लगभग 35 टन एवं आकार 15 फीट ऊंचा 11 फीट लम्बा एवं 6 फीट चौड़ा है। इसके मध्य में रानी महल बनाया गया है, जिसमें फूड कोर्ट को विकसित किया गया है। फसाड़ में व्यावसायिक दूकानों का निर्माण किया गया है।
- **नयापुरा गार्डनः**—नयापुरा गार्डन में खूबसूरत बावड़ी एवं उद्यान का निर्माण किया गया है। यह रिवर फ्रंट का प्रवेश द्वार है। इसमें पार्किंग स्थल भी विकसित किया गया है।

पश्चिमी छोर

- **जवाहर घाटः**—इस घाट पर पं0 जवाहर लाल नेहरू का गन मेटल से बना फेस मास्क लगाया गया है, जो कि 32 फीट ऊंचा एवं 25 टन वजनी है । पर्यटक मूर्ति की आंख के तल पर चढकर नेत्रों से पूर्वी तट के घाटों एवं चम्बल माता की मूर्ति को निहार सकते हैं।
- **गीता घाटः**—गीता घाट में वियतनाम मार्बल की पट्टिका में गीता के सम्पूर्ण 18 अध्याय के समस्त 700 श्लोकों को उकेरा गया है।
- **शान्ति घाटः**—इस घाट पर योग मुद्रा में इन्विजिबल स्कलप्चर लगाया गया है, जिसमें मानव शरीर के सातों चक्रों को दर्शाया गया है।
- **नन्दी घाटः**—इस घाट पर नन्दी की 25 फीट लम्बी 15 फीट चौड़ी एवं 20 फीट ऊंची (अधिकतम ऊंचाई) की प्रतिमा लगाई गई है।
- **वैदिक घाटः**—इस घाट पर पंच तत्वों को दर्षाते हुए बाडोली शैली में 5 मंदिरों का निर्माण किया गया है।
- **रोशन घाटः**—इस घाट में इस्लामिक फेज की वास्तुकला को दर्शाया गया है। इसके बीच में जन्नती दरवाजे का निर्माण किया गया है।
- **घंटी घाटः**—इसमें विश्व का सबसे बड़ा धातु का घंटा लगाया जाना है।
- **तिरंगा घाटः**—इस घाट पर भारत का विशाल राष्ट्रीय ध्वज लगाया गया है।
- **शौर्य घाट :**—यह पश्चिमी छोर का प्रवेश द्वार है। इस चौक में विशाल पार्किंग, पर्यटकों के लिए इन्फोरमेश्न सेंटर, रेस्टोरेंट आदि की व्यवस्था की गई है।
- **राजपूताना घाटः**— इस घाट में राजस्थान के विभिन्न अंचलों जैसे— मेवाड़, मारवाड़, ढूंढाड़, बांगड़, हाडौती क्षेत्र की विभिन्न इमारतों की प्रतिकृतियां बनाई गई हैं। इनमें पौद्दार हवेली, जगमंदिर, जगनिवास, गणगौरी घाट, हवामहल, गणेशपोल, सरगासुली, विजय स्तम्भ, ब्रहमा मंदिर, रणकपुर, पटवा हवेली आदि का निर्माण किया गया है।
- **जुगनू घाटः**— इस घाट में एल.ई.डी. के फ्लोरा एण्ड फोना तथा एक ओपन थियटर का निर्माण किया गया है।

- **हाथी घाटः**– इसमें प्राकृतिक चटटानो पर सफेद मार्बल के हाथी लगाये गये हैं।
- **बालाजी घाट** :– इस घाट पर बटुक बालाजी का मंदिर निर्माण किया गया है। पूर्व में निर्मित ऐतिहासिक मंदिरों की धरोहर को भी संरक्षित किया गया है।

पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए आयोजित गतिविधियां

- चम्बल रिवर फ्रंट के प्रचार प्रसार हेतु जिला प्रशासन द्वारा दिनांक 23 दिसम्बर 2024 से 25 दिसम्बर 2024 को चम्बल रिवर फ्रंट के पूर्वी घाट पर कोटा महोत्सव 2024का अयोजन किया गया जिसके तहत पर्यटको एंव आमजन हेतु निःशुल्क प्रवेश तथा पूर्वी घाट पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

- राज्य सरकार के कार्यकाल के एक वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष मे जिला स्तर पर पंचगौरव कार्यक्रम के तहत ''चम्बल रिवर फ्रंट'' पर फोटोग्राफ प्रतियोगिता कराई गयी जिसमे श्रेष्ठ प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया।

- चम्बल इंटरनेशनल फिल्म फेस्टीवल सीजन 8 का आयोजन 30 जनवरी को चम्बल रिवर फ्रंट के शोर्य घाट पर किया गया।

पर्यटन विभाग द्वारा 'चम्बल रिवर फ्रंट' के प्रचार प्रसार हेतु कोटा सिटी ऑफ यंग ड्रीम बुकलेट जारी की गयी।

आगामी कार्ययोजना

- चम्बल रिवर फ्रंट के प्रचार–प्रसार हेतु पर्यटन विभाग द्वारा चम्बल रिवर फ्रंट पर्यटन स्थल के आकर्षक पोस्टर, चम्बल रिवर फ्रंट की बुकलेट जारी कर आंगतुक पर्यटकों को वितरित किया जाना प्रस्तावित है।
- चम्बल रिवर फ्रंट पर राजस्थान दिवस 30 मार्च का आयोजन पर्यटन विभाग द्वारा प्रस्तावित है।
- चम्बल रिवर फ्रंट पर आगामी कोटा महोत्सव 2025 का आयोजन दिसम्बर माह में जिला प्रशासन द्वारा किया जाना प्रस्तावित है।
- विश्व पर्यटन दिवस पर पर्यटन विभाग द्वारा कार्यक्रम आयोजित किया जाना प्रस्तावित है।

एक जिला एक उत्पाद

कोटा डोरिया

राजस्थान के दक्षिणी पूर्व अंचल में स्थित कोटा संभाग राज्य में औद्योगिक मानचित्र पर एक विशेष स्थान रखता है। कोटा संभाग में कोटा मसूरिया साड़ी उद्योग न केवल राजस्थान राज्य अपितु पूरे भारत वर्ष में उद्योग बाजार में अपनी विशिष्ट पहचान बनाये हुए है। कोटा जिले में निर्मित कोटा डोरिया साड़ी अपनी बारीकी, विशिष्ट कला, विशेष किस्म एवं जरी के काम आदि की डिजाइन के कारण बनारसी, रेशमी, कांजीवरम से पूर्ण प्रतिद्वंदिता करती हुई अपनी साख बनाये हुए हैं।

कोटा जिले में एस.एस.ओ. पोर्टल पर पंजीकृत बुनकरों की संख्या 4340 है। कोटा जिले का कैथून कस्बा जो कि बुनकर बाहुल्य क्षेत्र है, यहां लगभग 2000 परिवार सीधे तौर पर साड़ी बुनाई कार्य से जुड़े हुए हैं। कैथून के अलावा कोटा जिले में कोटसुआं, सुल्तानपुर इत्यादि स्थानों पर भी कोटा डोरिया बुनाई का कार्य किया जाता है।

इतिहास

सत्रहवीं शताब्दी में कोटा राज्य के राव किशोर सिंह (1684 से 1695) मैसूर से कुछ बुनकरों को लाये थे तथा उन्हें कैथून कस्बे में चन्द्रलोई नदी के निकट बसाया गया। वहींबुनकर पीढ़ी दर पीढ़ी परमपरागत बुनाई कार्य को आगे बढ़ाते हुए कोटा डोरिया के उन्नयन हेतु कार्य कर रहे हैं।

बुनकरों के उत्थान हेतु राज्य सरकार द्वारा राज्य क्लस्टर परियोजना के तहत कोटा डोरिया क्लस्टर का चयन किया गया था तथा क्लस्टर क्रियान्वयन हेतु रूड़ा को अधिकृत किया गया। रूड़ा द्वारा वर्ष 2005–06 से परियोजना अवधि में कोटा महिला बुनकर संस्था तथा कोटा डोरिया हाड़ौती फाउण्डेशन का संस्था एक्ट के तहत पंजीयन करवाया गया। कॉमन फेसिलिटी सेन्टर का निर्माण भी करवाया गया।

सीएफसी की 2005–06 में स्वीकृति एवं निर्माण होने पश्चात रूड़ा, जयपुर द्वारा सीएफसी संचालन हेतु कोटा महिला बुनकर संस्था को सुपुर्द किया गया। सीएफसी का संचालन एसपीवी संस्था कोटा महिला बुनकर संस्था द्वारा किया जा रहा है। सीएफसी में वर्तमान में कोटा महिला बुनकर संस्था, कैथून को वित्तीय सहायता संबंधित कार्य लिविंग लूम ऑफ इण्डिया, प्रोड्यूसर कम्पनी लि. द्वारा एचएसबीसी के सहयोग से किया जा रहा है। कम्पनी द्वारा रूड़ा से अनुमति प्राप्त कर कोटा महिला बुनकर संस्था के सदस्यों को निदेशक बनाया गया है, जिसके माध्यम से यार्न (कच्चा माल) उपलब्ध कराया जाता है। इसके अतिरिक्त सीएफसी में मशीनों/लूम के बाढ़ से बचाव हेतु सीएफसी के उपरी तल पर एक टीन शेड कक्ष का निर्माण किया गया है। कम्पनी द्वारा 5 पिटलूम भी स्थापित किये गये हैं, जिन पर स्थानीय बुनकरों द्वारा बुनाई कार्य किया जा रहा है।

बुनाई प्रक्रिया

- **तनाई** – इस विधि से हजार मीटर की लच्छियो से कुछ उपकरणों की सहायता से ताना तैयार किया जाता है।
- **रंगाई** – इस विधि में ताने व बाने की प्राकृतिक रंगों से रंगाई की जाती है।
- **कलफ** – इस विधि में ताने पर कलफ कर पाण का रूप दे दिया जाता है।
- **ग्राफिंग व जाला** – इस विधि में पेपर पर डिजाइन कर लूम पर धागों को सेट किया जाता है।
- **कॉम्बिंग** – इस विधि में धागों को सेट डिजाइन अनुसार लूम पर पाण पर जोड़ दिया जाता है।
- **बुनाई** – इस विधि में सर्वप्रथम बाने को चरखे व पिन की सहायता से रितियो व तिलियों पर भरा जाता है तथा रितियों को ढोटों पर सेट कर राछ व पाण द्वारा एक सिरे से दूसरे सिरे तक धागों को फनी के द्वारा जाले की तकनीक से तिलियों से डिजाइन की जाती है और बुने हुए कपड़े को आगे तुर पर लपेट लिया जाता है। इस प्रकार एक साड़ी को बनाने में 10 से 15 दिन का न्यूनतम समय लगता है।

विशेषताएं

कोटा डोरिया मे बहुत ही महीन खुली बुनाई खत के रूप में की जाती है, जो कि आयताकार, चेक पेर्टन को दर्शाता है। कोटा डोरिया का कपड़ा वजन में अत्यधिक हल्का, सिल्क व सूत से बनाया जाता है तथा कोटा डोरिया साड़ी के किनारी पर फूल व पत्तियां बनाकर सजाया जाता है जिसे बूटी कहा जाता है।

वर्तमान परिदृश्य एवं उत्पादन

वर्तमान में कैथून में कोटा डोरिया का वार्षिक उत्पादन लगभग 50000 साड़ियों का है एवं एक साड़ी का न्यूनतम मूल्य 5000 से शुरू होकर 12000/– तक का होता है। भारी साड़ी की बुनाई पर यह मूल्य लगभग एक लाख तक भी पहुंच जाता है।

निर्यात – कोटा डोरिया साड़ी की विदेशों में भी मांग निरन्तर बढ़ती जा रही है। वर्तमान में कोटा डोरिया साड़ी अमेरिका, कनाड़ा, ब्रिटेन इत्यादि देशों में निर्यात की जा रही है। बुनकरों द्वारा ई–कामर्स प्लेटफोर्म के माध्यम से साड़ियों का निर्यात किया जा रहा है।

कोटा डोरिया उन्नयन हेतु संचालित गतिविधियां

कोटा डोरिया साड़ी हेतु, कोटा डोरिया हाड़ौती फाउण्डेशन को जी.आई. सं. 12 भी प्राप्त है। भारत सरकार की इण्डिया हेण्डलूम ब्राण्ड योजनान्तर्गत कोटा डोरिया साड़ी को चिन्हित किया गया है। अब तक 32 बुनकरों के पंजीयन हो चुके हैं।कोटा जिले के कोटा डोरिया बुनाई करने वाले 5 बुनकरों को राष्ट्रीय पुरूस्कार, 5 बुनकरों को राष्ट्रीय मेरिट पुरूस्कार, 10 बुनकरों को राज्य स्तरीय पुरूस्कार तथा 3 बुनकरों को राज्य सरकार द्वारा उद्योग रत्न पुरूस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। बुनकर पुरस्कार योजनान्तर्गत प्रतिवर्ष बुनकरों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से जिला कलक्टर महोदय की अध्यक्षता में बैठक कर उनके उत्पादों का चयन कर पुरस्कृत किया जाता है।

- वर्ष 2023–24 तक मिशन निर्यातक बनों के तहत् 19 बुनकरों के आई.ई.सी. प्रमाण पत्र जारी किये गये तथा उत्पाद की बिक्री हेतु ऑनलाईन प्लेटफॉर्म प्रदान करने के लिए अमेजॉन कम्पनी से जोड़ने की प्रयास किये जा रहे हैं ताकि बुनकर अपने द्वारा उत्पादित उत्कृष्ट उत्पादों का उचित मूल्य प्राप्त कर सके।
- मुख्यमंत्री लघु उद्योग प्रोत्साहन योजनान्तर्गत बुनकरों को ऋण सुविधा उपलब्ध कराई जाती है। गत् वर्ष 86 बुनकरों को ब्याज अनुदान भी उपलब्ध कराया गया है। योजनान्तर्गत रू 01.00 लाख तक के ऋण पर 5 वर्ष तक सम्पूर्ण ब्याज का पुनर्भरण विभाग द्वारा किया जाता है।

- हथकरघा बुनकरों के कल्याण हेतु भारत सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा निम्न योजनाऐं चलाई जा रही हैं–

  - बुनकरों को जिला स्तर, राज्य स्तर, राष्ट्रीय स्तर पर पुरूस्कृत करना (जिला स्तर पर 12,500/– तक बजट प्रावधान)
  - राजस्थान हेण्डमेड पोर्टल पर परिचय पत्र जारी करना
  - राष्ट्रीय पुरूस्कार/मेरिट अवार्ड प्राप्त हस्तशिल्पियों/हथकरघा बुनकरों को राज्य स्तर पर उद्योग रत्न पुरूस्कार
  - बाजार सहायता योजना – बुनकरों द्वारा राज्य एवं राज्य से बाहर आयोजित होने वाले मेलो एवं प्रदर्शनी में स्टॉल लगाये जाने बाजार सहायता योजना के तहत स्टॉल रेन्ट में छूट के तहत पुर्नभरण किया जाता है। साथ ही बुनकरों को देश भर में आयोजित होने वाले मेला/प्रदर्शनी की जानकारी भी प्रदान की जाती है।
  - उत्पादों के विविधिकरण हेतु अन्य राज्यों की स्टडी टूर योजना– राज्य सरकार द्वारा प्रतिवर्ष उत्पाद विविधीकरण योजना के तहत बुनकरों को स्टडी टूर पर ले जाया जाता है।
  - 40 बुनकरों को रियायती दर पर धागा खरीदने हेतु यार्न डायरी के लिए एन.एच.डी.सी. के माध्यम से अनुशंषा की गयी है।
  - बुनकरों को उनके द्वारा उत्पाद के प्रमोशन हेतु क्रेता–विक्रेता सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है एवं आगे भी क्रेता–विक्रेता सम्मेलन आयोजित किये जाते रहेंगे।
  - वर्तमान में सीएफसी में कई संस्थाओं की भागीदारी यथा बुनकर सेवा केन्द्र, हथकरघा विकास निगम लिमिटेड इत्यादि है जो उत्पाद के विकास हेतु बुनकरों को यार्न उपलब्ध कराने एवं उनके द्वारा निर्मित माल के विपणन में सहायता प्रदान करती है। बुनकर सेवा केन्द्रो के माध्यम से उन्नत लूम, यार्न, जरी आदि उपलब्ध करवायी जाती है इसमें अधिकाधिक बुनकरों को जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

कोटा डोरिया के उत्पाद को बढ़ावा देने के लिए समय–समय पर मेला एवं प्रदर्शनी आयोजित की जाती है जहॉ पर इस उत्पाद का प्रदर्शन एवं विपणन का कार्य किया जाता है। कोटा डोरिया के विकास हेतु कॉमन फेसिलिटी सेन्टर (सीएफसी) मवासा रोड़ कैथून में स्थित है।

हस्तशिल्प एवं हथकरघा से जुडे आर्टीजन्स को समय समय पर कार्यालय स्तर से राज्य/राष्ट्रीय/अन्तराष्ट्रीय प्रदर्शनियों/मेला के आयोजन की सूचना प्राप्त होने पर उपलब्ध करायी जाती है। जिला प्रशासन स्तर/कार्यालय स्तर पर आयोजित होने वाली प्रदर्शनियों की सूचना उपलब्ध कराते हुए आर्टीजन को निःशुल्क स्टॉल आवंटन करवाकर प्रोत्साहित किया जाता है।

प्रस्तावित गतिविधियां

- बुनकरों हेतु समय समय पर मेला प्रदर्शनी का आयोजन किया जाना प्रस्तावित है। मिशन निर्यातक बनो की तर्ज पर आईईसी के माध्यम से आयात एवं निर्यात गतिविधि की जानकारी प्रदान करने हेतु कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना प्रस्तावित है। इच्छुक बनुकरों की पंजियन संबंधी प्रक्रिया चालू रखते हुए बुनकरों के उत्पादो के निर्यात हेतु पंजीयन कराना तथा निर्यात प्रक्रिया संबंधी जानकारी प्रदान करना, विषय विशेषज्ञो के साथ कार्यशाला आयोजन आदि के माध्यम से बुनकरो को प्रोत्साहित किया जाना प्रस्तावित है।
- कोटा जिले के कैथून कस्बे में बुनाई, रंगाई, कताई एवं डिजाइन फ्रेम वर्क पीढ़ी दर पीढ़ी चला आ रहा है जिसे कौशल उन्नयन एवं नवीन तकनीक प्रदान किया जाना अति आवश्यक है। इस हेतु समय समय पर हस्तशिल्प से जुडी तकनीकी संस्थाओं, भारत सरकार के उपक्रम बुनकर सेवा केन्द्र आदि के माध्यम से कौशल विकास कार्यक्रम चलाये जाने अपेक्षित है। कोटा डोरिया कलस्टर पूर्व से कार्यरत है।
- बुनकरो एवं आर्टीजन्स के उत्थान हेतु विषय विशेषज्ञो की एक्सपोजर विजिट उत्पाद विविधिकरण योजनान्तर्गत की जाती है। इससे बुनकर देश के अन्य राज्यों में तैयार किये जाने वाले उत्पादों से रूबरू होते है एवं नवीन तकनीक का ज्ञान एवं अनुभव प्राप्त करते है।
- कोटा डोरिया से बने उत्पादो के प्रदर्शन हेतु समय समय पर जिला स्तर पर, अन्य जिलो एवं राज्य स्तर पर भी आयोजित किये जाने प्रस्तावित हैं।
- डोरिया से बनने वाले उत्पादों के डिजाईन डवलपमेन्ट के लिए नेशनल फेशन टेक्नोलाजी काउसिंल के विषय विशेषज्ञो से बुनकरों को संवाद कार्यक्रम आयोजित किया जाना प्रस्तावित है ताकि उन्हें अपने उत्पाद को बेहतर बनाने में मदद मिल सके।
- एक जिला एक उत्पाद के तहत जिस प्रकार रेलवे स्टेशनो पर एक स्टॉल आवंटित की गयी है उसी तर्ज पर कोटा विकास प्राधिकरण एवं अन्य वृहत एजेन्सियों द्वारा उपलब्ध प्लेटफार्मो पर भी स्टॉल आवंटित की जानी अपेक्षित है।

डिजिटल बाजार संबंधो का विकास और डिजिटल मार्केटिंग

कोटा डोरिया उत्पादों का विपणन जिला/राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर किया जाता है। इन उत्पादों को मूल्य संवर्द्धन की दृष्टि से एवं वर्तमान परिपेक्ष्य में ऑनलाइन डिजिटल बाजार से जोड़ने की आवश्यकता है। चूंकि अधिकांश बुनकर इस जानकारी से अनभिज्ञ हैं, इस हेतु डिजिटल बाजार सेवा प्रदाताओं के साथ कार्यशालाओं का आयोजन प्रस्तावित है ताकि बुनकर/आर्टीजन्स/हस्तशिल्पी अपने उत्पादों को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में ऑनलाइन प्रस्तुत कर बेहतर मूल्य प्राप्त कर सके।

————000———

एक जिला, एक वनस्पति प्रजाति

खैर

खैर एकेशिया कैटेचु प्रजाति का है। यह लेग्युमिनस परिवार में आता है। इस वृक्ष की उत्पत्ति दक्ष प्रजापति की अस्थियो से होनी बताई गई है। खैर का वृक्ष मध्यमाकार अर्थात 10–12 फुट या कुछ अधिक होता है। वृक्ष की छाल आधा इंच से पौन इंच तक लम्बी पतली, पत्तों को छूती हुई, बाहर से कृष्णाभ भूरे रंग की और भीतर से भूरे रंग की होती है।

शाखाएं पतली जिन पर 11–12 जोडे सींके रहती है। उन पर शमी वृक्ष के समान 30 से 50 जोडे छोटे–छोटे पत्ते रहते हैं। शाखाओं पर टेढ़े काटे होते है। ये काटे छोटे बडिशाकार, भूरे या काले और चमकीले होते है। पत्र 10–12 सेमी लम्बे होते है, पुष्प छोटे श्वेत व हल्के पीले होते है, 2–3.5 इंच लम्बी, अक्षीय मंजरियों में समूहबद्ध होते हैं। शिम्बी (फली) 80 से 100 मि. मी. लम्बी, पतली, धूसर, चमकीली, प्रायः अनियमित रूप से सिकुडी, अग्रभाग गोल या चंचुवत होता है जिनमे 4–5 बीज होते है। वर्षा ऋतु में इस पर पुष्प एवं हेमन्त ऋतु में फल आते हैं।

भौगोलिक स्थिति

जिले में खैर के वृक्ष सांगोद, रामगंजमण्डी एवं लाडपुरा तहसील में लगभग 40 हजार हैक्टेयर क्षेत्र में पाए जाते हैं।

पर्यावरणीय एवं औषधीय महत्व

खैर की जड़े मिट्टी कटाव रोकने में सहायक होती हैं। इसकी पत्तियां कृमिनाशक होती हैं। यह पर्यावरण को सन्तुलित रखता है। औषधीय महत्व निम्नानुसार हैं–

- मुख रोग एवं मुख शुद्धि में कारगर
- त्वचा रोग एवं रक्त रोग में उपयोगी
- खैर के गोंद का उपयोग प्राचीनकाल से चला आ रहा है।
- मृगशिरा नक्षत्र वाले पुरुषों के लिए उपयोगी
- मंगल ग्रह की शान्ति के लिए निर्दिष्ट किया है।
- खैर को धारण करने से अत्यन्त बल वाले पुरूष शत्रुओं का नाश करनेमें समर्थ होते हैं।
- शरीर की शुद्धि कर आमविष (टॉक्सिन) को बाहर निकालता है।
- कान्तिवर्धक, मांसवर्धक, हृदय को बल देना
- आंख, कान के रोगों में लाभदायक
- मधुमेह रोग, कुष्ठ रोग, श्वांस रोग, जीर्ण ज्वर आदि रोगो मे लाभदायक

उपयोग

आयुर्बलंयशो वर्चः प्रजापशुवसूनिच । बह्य प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते ।।

ऋग्वेद (3–53–19) के अनुसार इसकी लकडी का प्रयोग रथ की धुरी में होता था। अथर्ववेद (3–2–6–1) के अनुसार इसका प्रयोग लाख का कीड़ा पालने में होता था। खैर का उपयोग प्रमुखतः कत्था बनाने में किया जाता है।

कत्था बनाने की विधि

पुराने परिपक्व खैर के वृक्ष की लकड़ी के मध्य भाग के महीन टुकड़े कर बड़े पात्र में भरकर भट्टी में पकाते हैं। फिर छानकर गाढ़ा या घन क्वाथ तैयार कर छोटी बड़ी कई प्रकार की टिकिया बना लेते हैं। यही कत्था या खैर कहा जाता है।

खैर के प्रोत्साहन के लिए प्रस्तावित गतिविधियां

आगामी वर्षा ऋतु में खैर के पौधों को लगाने हेतु और आम जनता में पौधों के वितरण के लिये लगभग 1 लाख पौधों का रोपण और वितरण विभाग की सभी पौधशालाओं में किया जाएगा।विभाग द्वारा पौधारोपण अभियान अन्तर्गत हर साल थावलों पर बीज रोपण किया जाता है। अगले वर्षा ऋतु में थावलों पर खैर के बीजारोपण को बढ़ावा दिया जाएगा।खैर के पेड़ के संबध में अधिक जानकारी होने हेतु विशेषज्ञों द्वारा विभाग के कार्मिकों का ज्ञानवर्धन किया जाएगा।आमजन, विद्यार्थियों एवं वन प्रेमियों में खैर के संबंध में जागरूकता बढ़ाने हेतु प्रदर्शनियों का आयोजन किया जाएगा तथा स्कूलों में निबंध प्रतियोगता का आयोजन किया जाएगा। खैर के विशेष गुण लोगों तक पहुंचाने हेतु सोशल मीडिया अभियान चलाया जायेगा एवं लघु फिल्म का निर्माण किया जाएगा।खैर से बने खाद्य प्रदार्थ एवं अन्य सामग्री के संबंध में जागरूकता निर्माण करने के लिये उक्त वस्तुओं की निर्माण प्रक्रिया एवं विपणन के संबंध में ग्रामीणों का ज्ञानवर्धन करने हेतु विभाग द्वारा स्वयं सहायता समूहों के साथ साझेदारी की जायेगी जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका निर्माण के अवसर बढ़ेंगे।

खैर के लुप्त होने के प्रमुख कारण

1. जलाऊ लकड़ी के लिए उपयोग में लेना ।
2. जागरूकता का अभाव।
3. विलायती बबूल का प्रसार।
4. कत्था व्यापार के लिए इसके सम्पूर्ण वृक्ष को नष्ट कर देना ।

संरक्षण के उपाय

1. हाडौती संभाग में सघन वृक्षारोपण करके
2. आमजन को प्रचार प्रसार करके जागरूक बनाना
3. पौध वितरण में शामिल करके
4. अनुसंधान कर बेहतर किस्में तैयार करना

———————————

एक जिला एक उपज

धनिया

एक जिला एक उपज के तहत धनियां मसाला फसल को गौरव प्रदान किया गया है।राजस्थान राज्य में पैदा होने वाले धनियें का लगभग 95 प्रतिशत क्षेत्रफल का उत्पादन हाडौती क्षेत्र से ही आता है। कोटा जिले में धनियां राजमगंजमण्डी क्षेत्र में मुख्य तथा अन्य तहसीलों में रबी में बोई जाने वाली मसाला फसल है। धनियां की फसल के लिए शुष्क एवं ठण्डा मौसम अधिक उपज के लिए अनुकूल रहता है। धनियां की खेती लगभग सभी प्रकार की भूमि में की जा सकती है। फसल परिपक्वता के समय शुष्क मौसम अच्छी गुणवता धनियां पैदा करने के लिए उपयुक्त होता है। किसान भाई धनियां की उन्नत उत्पाद तकनीक एवं प्रसंस्करण को अपनाकर अधिक आय अर्जित कर सकते है।

औषधीय महत्व

बीजीय मसालों में धनिये का प्रमुख स्थान है। यह दानों एवं पत्तियों दोनो के लिए उगाया जा सकता है। धनियें में शर्करा, प्रोटीन व विटामिन ए, सी, के, पोटेशियम, कैल्शियम, आयरन और मैग्नीशियम जैसे पौषक तत्व बहुतायत में पाया जाता है। इसका प्रयोग भोजन को सुगन्धित व स्वादिष्ट बनाता है।

धनियां बीज में वाष्पशील तेल की मात्रा 0.1 से 0.7 प्रतिशत तक होती है जो कि औषधीय रूप में प्रयोग किया जाता है। धनियें की सुगन्ध इसमे उपस्थित तेल के कारण ही होती है। जिसका उपयोग पाचन में सुधान, रक्त शर्करा को नियंत्रित करने में, संक्रमण से लडने और हृदय स्वास्थ्य को बढावा देने में मदद करने के लिए किया जाता है। धनियां के बीज आयरन का एक समृद्ध स्त्रोत है, जो एनीमिया को रोकने में मदद करते हैं।

धनियें का उपयोग दाना, पाउडर, वाष्पशील तेल, ओलिरेजिन आदि मे किया जाता है। इसके साथ ही इसके प्रयोग से महत्वपूर्ण मूल्य संवर्धित उत्पाद भी बनाऐं जाते है।

तहसीलवार उत्पादन क्षेत्र वर्ष 2023–24

S.No.	District	Tehsil	Area (ha.)	Prod. (MT)	Average Productivity
1	Kota	Ramganjmandi	5091	7636	1500 Kg per Hectare
		Chechat	2602	3903	
		Ladpura	1933	2900	
		Pipalda	552	828	
		Sangod	473	710	
		Kanwas	354	531	
		Digod	215	322	
Total			**11220**	**16830**	

राजमगंजमण्डी जो धनियां की मण्डी के नाम विख्यात है, राजस्थान ही नहीं विश्व की सबसे बढी धनियां मण्डी है। धनियां फसल के क्षेत्रफल एवं उत्पादन पर विगत वर्षों में मौसम की प्रतिकूल दशाओं, कीट–व्याधि के प्रकोप, बाजार भाव कम रहने से काफी प्रभाव पडा है।

प्रस्तावित गतिविधियां

धनियां फसल के समुचित विकास, उत्पादकता एवं गुणवत्ता बढाये जाने हेतु निम्न गतिविधियां प्रस्तावित है।

क्र. सं.	प्रस्तावित गतिविधि	अनुमानित इकाई लागत	प्रस्तावित संख्या	नवीन कार्यक्रम अन्तर्गत राशि की मांग (लाखों में)	नवीन कार्यक्रम अन्तर्गत प्रस्तावित अनुदान
1	धनियां सेमिनार	1 लाख रू. प्रति सेमीनार (100 कृषक)	2	2.00	100 प्रतिशत
2	धनियां उन्नत बीज एवं आदान प्रदर्शन	13750 रू. प्रति हैक्टेयर/प्रदर्शन	210 हैक्टेयर	26.00	90 प्रतिशत
3	मुवेबल थ्रेसिंग फ्लोर (एचडीपीई त्रिपाल 8 x 6 Mtr. 250 GSM)	0.04 लाख प्रति नग	2000	72.00	90 प्रतिशत
कुल योग		**-**	**-**	**100.00**	**-**

आयोजित कार्यक्रम

पंच गौरव अन्तर्गत जिले में धनियां फसल को बढावा दिये जाने हेतु पंच गौरव प्रदर्शनी का आयोजन महाराव उम्मेदसिंह स्टेडियम, कोटा एवं चम्बल रिवर फ्रंट शौर्य घांट पर किया गया जिसमें धनियां की किस्मों, उत्पाद की प्रदर्शनी, साहित्य का वितरण कर प्रचार–प्रसार किया गया।

पंच गौरव अन्तर्गत चयनित धनियां फसल को बढावा दिये जाने हेतु राष्ट्रीय बागवानी मिशन दो दिवसीय सेमीनार एवं प्रत्येक ब्लॉक पर किसान मेलों का आयोजन कर तकनीकी से आत्मनिर्भर किसान हेतु प्रयास किये गये है।

फसलोत्तर प्रबन्धन अन्तर्गत धनियां के शीतगृह भण्डारण हेतु राज्य स्तर से विभागीय अनुदान सहायता 35 प्रतिशत राशि 135.49 लाख रू. से लाभान्वित किया गया है तथा धनियां उत्पाद को बढावा दिये जाने हेतु राजिविका द्वारा निर्मित स्वयं सहायता समूह तथा कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन का आयोजन किया जा रहा है। धनियां फसल रबी में उन्नत शस्य क्रियाओं हेतु प्रदर्शन, पौध संरक्षण उपचार 50 प्रतिशत अनुदान तथा समन्वित पौषक तत्व प्रबन्धन किट 75 प्रतिशत अनुदान पर कृषकों को उपलब्ध कराए गए हैं।

———————

‘एक जिला, एक खेल’

कुश्ती

एक जिला, एक खेल में कोटा जिले में कुश्ती को चिन्हित किया गया है। कुश्ती को प्राथमिकता दिए जाने से इस पारंपरिक खेल को बल मिलेगा। आधुनिक सुविधाओं, प्रशिक्षकों की सहायता और प्रतियोगिताओं के आयोजन से कोटा जिले के युवा पहलवानों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने का अवसर मिलेगा।

इस योजना से न केवल कुश्ती खेल को मजबूती मिलेगी बल्कि कोटा को एक प्रमुख कुश्ती केंद्र के रूप में स्थापित करने में भी सहायता मिलेगी।

कोटा में कुश्ती प्रशिक्षण की स्थिति

कोटा जिले में कुश्ती खेल को बढ़ावा देने के लिए क्षेत्रीय खेलकूद प्रशिक्षण केंद्र, कोटा में सुविधाएँ उपलब्ध कराई गई हैं। यहाँ राष्ट्रीय स्तर की कुश्ती मेट और इंडोर हॉल की व्यवस्था की गई है जिससे खिलाड़ियों को आधुनिक सुविधाओं के साथ अभ्यास करने का मौका मिल रहा है।

प्रमुख विशेषताएँ

- दो कुश्ती प्रशिक्षक अनुबंध पर कार्यरत हैं, जो नियमित रूप से खिलाड़ियों को प्रशिक्षण दे रहे हैं।
- यहाँ 40 से 50 खिलाड़ी जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए तैयार हो रहे हैं।
- खिलाड़ियों को प्रातः कालीन एवं सायंकालीन नियमित प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

ब्लॉक एवं जिला स्तरीय प्रतियोगिताएँ– नए खिलाड़ियों को मौका

ब्लॉक स्तर से लेकर जिला स्तर तक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। ब्लॉक स्तर पर महिला एवं पुरुष कुश्ती प्रतियोगिताएँ आयोजित होंगी।ब्लॉक स्तर पर प्रथम चार स्थान पाने वाले खिलाड़ी जिला स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेंगे।इस प्रक्रिया से जिले के उभरते हुए कुश्ती खिलाड़ियों को आगे बढ़ने का मौका मिलेगा और उनका मनोबल बढ़ेगा।

खिलाड़ियों के लिए आवश्यक खेल उपकरण एवं संसाधन उपलब्ध कराने से प्रशिक्षण की गुणवत्ता में सुधार होगा और खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा को निखारने में सहायता मिलेगी।